International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

वैश्विक पर्यावरणीय संकट के दौर मे गाँधी जी के स्वदेशी आन्दोलन की प्रासंगिकता

Ramawatar Meena[1], Dr.Vipin Patel[2], Akhilesh Kumar Singh[3]

[1]PhD, Scholar at Department of African Studies, University of Delhi
[2]Assitant Professor, School of Global Affairs (SGA), Dr. BR. Ambedkar University, Delhi
[3]Guest Faculty at Lakshmibai College, University of Delhi

सार-

पर्यावरण संरक्षण पर गाँधी जी का सार्थक कथन "पृथ्वी हर व्यक्ति की जरूरतों पूरी करने में समर्थ है किंतु हर एक का लालच पूरा करने में नहीं" राष्ट्रपिता के इस कथन को दिशानिर्देशक मानकर व्यक्ति नीजि तौर पर अपनी आवश्यकताओं को (सीमित रखने को प्रेरित हो सकता है किंतु विगत 100 वर्षों में तकनीकी व वैज्ञानिक प्रगति के कारण उत्पादन की विधियाँ बदली है उत्पादन के संबंध बदले है जिससे समाज में अनेक परिवर्तन आये है एक समय जो मांग आधारित अर्थव्यवस्था थी वो पूर्ति आधारित अर्थव्यवस्था में परिवर्तित हो गई है। वैश्वीकरण के दौर के चलते हमारे बाजारों में विदेशी उत्पादों की भरमार हो गई है ऐसे में स्थानीय लघु एवं मध्यम उद्योगों एवं स्थानीय उत्पादन पर बुरा असर पड़ा है। जो कि उत्तर औद्योगिक समाज बनने की होड़ एवम लोगों में बढ़ती स्वार्थपरता का परिणाम है।

Keywords- पर्यावरण , स्वदेशी ,आन्दोलन ,अहिंसा ,स्वावलंबन,स्वराज्य,

गाँधीजी वास्तव में पहले पर्यावरणविद थे जिन्होंने आधुनिक औद्योगिक समाज के कारण होने वाले पर्यावरणीय समस्याओं पर ध्यान आकृष्ट किया था। 1909 में हिन्द स्वराज में प्रकाशित लेख में उन्होंने लिखा कि वर्तमान दर से होते हुए विकास के कारण किस प्रकार से मनुष्य का मनुष्य द्वारा तथा प्रकृति का शोषण किया जा रहा है।
पर्यावरण संरक्षण आन्दोलन एवम आन्दोलनकर्ता (चिपको आन्दोलन चंडी प्रसाद भट्ट, सुन्दरलाल बहुगुणा, बाबा आम्टे एवम मेघा पाटेकर (नर्मदा बचाओ आंदोलन) इन सभी को आंदोलन की प्रेरणा गाँधीजी से ही मिली। वही अन्य समूह जैसे सुलभ इण्टरनेशनल जो हरिजनों एवम सफाई कर्मियों के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने के लिए कार्य करता है यह भी गाँधीजी के विचारों से प्रभावित है।
गाँधीजी जैन धर्म से प्रभावित थे जो प्रकृति को जीवित इकाई के रूप में मानने और मनुष्य को विभिन्न जीवन रूपों का परस्पर सम्मान करके खुद को लगातार शुद्ध करने को प्रेरित करता है। सत्य एवम अहिंसा का गाँधीवादी विचार व्यक्ति एवम समाज के लालच को कम करने के लिए उपयोगी हो सकता है। अहिंसा की उनकी अवधारणा ने इस प्रकार सभी जीवित प्राणियों को शामिल किया ।
जैन धर्म प्रकृति को एक सजीव इकाई मानता है और मनुष्य को विविध जीव रूपों का सम्मान करके निरंतर स्वयं को शुद्ध करने के लिए प्रेरित करता है, हिंदू धर्म भी प्रकृति और सभी जीव रूपों को समान श्रद्धा से देखता है। रवींद्रनाथ टैगोर ने अपनी कविताओं और रचनाओं में प्रकृति का प्रतिनिधित्व किया, उनके द्वारा स्थापित संस्था शांति निकेतन, प्रकृति-अनुकूल अध्ययन और जीवन का एक और उदाहरण है।

अहिंसा दुनिया के महान सिद्धांतों में से एक है जिसे दुनिया की कोई भी ताकत खत्म नहीं कर सक मेरे जैसे हज़ारों लोग इस आदर्श को सही साबित करने की कोशिश में मर सकते हैं, लेकिन अहिंसा कभी नहीं मरेगी। और अहिंसा का संदेश सिर्फ़ उन लोगों के ज़रिए ही फैलाया जा सकता है जो इसके लिए मरते हैं।[1] (गाँधी, 1946

गांधी जी ने कई पश्चिमी विचारकों से प्रेरणा ली, जो आधुनिकतावादी परियोजना के पूर्णतः विरोधी तो नहीं थे, लेकिन औद्योगीकरण से पूर्व की व्यवस्था को प्रेमपूर्वक संजोते थे। उदाहरण के लिए, जॉन रस्किन औद्योगीकरण की आलोचना करते हुए कहते थे कि इसने मानवीय संवेदनशीलता को क्षीण कर दिया है और प्रकृति के साथ मनुष्य के सामंजस्यपूर्ण संबंध को नष्ट कर दिया है। अमेरिकी कवि और प्रकृतिवादी हेनरी डेविड थोरो, जिनके सविनय अवज्ञा पर लिखे निबंध ने गांधी जी को प्रभावित किया था, का तो यह भी मानना था कि प्रकृति मनुष्य के बिना भी विद्यमान रह सकती है। जॉन रस्किन और हिंदू रहस्यवाद से प्रभावित एडवर्ड कारपेंटर भी एक सरल और प्रकृति के निकट जीवन जीना चाहते थे। सभ्यता पर उनकी आलोचना का गांधी जी की पहली पुस्तक 'हिंद स्वराज' पर गहरा प्रभाव पड़ा। कारपेंटर, जो एक समाजवादी थे, पशु अधिकारों के लिए प्रारंभिक कार्यकर्ता भी थे। इन सभी विचारकों की विशेषता प्रकृति के प्रति एक प्रकार का प्रेम और औद्योगिक सभ्यता एवं शहरीकरण के प्रति सामान्य अरुचि है। गांधी जी के भी ऐसे ही प्रेम भाव व्यक्त करने वाले कथन मिलते हैं। प्रकृति और पशुओं के संरक्षक संत, सेंट फ्रांसिस ऑफ असीसी का उदाहरण निश्चित रूप से गांधी जी को आकर्षित करता था।[2]

उन्होंने जीवन की शाश्वत पवित्रता पर जोर दिया जिसमे एक पेड़, एक गाय शामिल है! अंग्रेजी इतिहासकार एडवर्ड थॉम्पसन ने एक बार गाँधी जी से कहा था कि भारत में वन्य जीवन तेजी से घट रहा है, जिस पर गाँधी जी व्यंग के साथ-साथ जवाब दिया जंगलों में वन्य जीव कम हो रहे हैं लेकिन शहरों में बढ़ रहे है

सर्वोदय की अवधारणा भी एक सतत विकास का मूल मंत्र है यह अवधारणा आत्म विकास के साथ सर्व कल्याण पर बल देती है। यह पर्यावरण नैतिकता का एक हिस्सा है | सर्वोदय के माध्यम से गांधी जी जन सामान्य को स्वदेशी और स्वावलम्बन को अपनाने की सीख देते है तथा विदेशी के बहिष्कार की बात करते हैं जो आज माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिए गए उद्घोष लोकल फॉर वोकल को भी प्रेरित करता है।

भारत में वनों के राज्य प्रबन्धन का पहला मामला बोम्बे राजस्व मण्डल मे 1842 में आया, इसमें प्रमुख भूमिका पेशेवर वनस्पतिशास्त्री अलेक्जेण्डर गिब्सन के नेतृत्व निभायी | वही गांधी द्वारा अपने चम्पारण सत्याग्रह के दौरान बेतिया में अपनाया। चम्पारण में देश की आजादी के लिए सत्याग्रह के साथ पर्यावरण संरक्षण की बुनियाद रखी गयी | विकास के उद्देश्य से प्राकृतिक संसाधनों का दोहन पर्यावरणीय संकट लायेगा कालान्तर के दिनों में सरकारों की और से ध्यान नही दिया गया।

आधुनिकता जनित प्रतिस्पर्धा की दौड़ में पर्यावरण की बहुत अनदेखी की गई इसी सन्दर्भ में गांधी के 150 वर्ष पूर्व दिया गया विचार ना केवल सामाजिक आन्दोलनों, महिला, के सन्दर्भ बल्कि पर्यावरण एवं स्वदेशी को बढ़ावा देने के साथ साथ संरक्षण में भी विशेष उपयोगी है।

आधुनिकता के चक्कर में प्राकृतिक संसाधनों का व्यापक दुरुपयोग हुआ हैं। मोहनदास करमचन्द बिहार अभिलेखागार पूर्व उपसचिव एवम गांधीवादी विचारक बादशाह चौबे का कहना है कि, गांधी के विचारों को पढ़ा जाता है तो लगता है कि उन्होंने स्वतन्त्रता आन्दोलन में ही महत्वपूर्ण भूमिका नही निभायी बल्कि सामाजिक, पर्यावरणीय, स्वदेशी अपनाओ आन्दोलन से लेकर चरखा चलाने तक हर संभव प्रयास किए।

---

[1] गाँधी, हरिजन 1946

[2] डॉ. जॉन एस मूलक्कट्टू, महात्मा गांधी और पर्यावरण

वर्तमान पर्यावरणीय समस्याओं एवं उनके स्थाई समाधान हेतु गांधीयन विचारों को रेखांकित करते हुए इस शोध पेपर में औद्योगिक विकास आधुनिक समाज एवं जीवनशैली से उभरी पर्यावरणीय समस्याओं पर गांधियन आर्यसत्य सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, स्वदेशी और स्वच्छता के साथ बुद्ध द्वारा सुझाये गये मध्यम मार्ग को जीवनचर्या में अपनाने पर बल दिया जाए | प्रकृति व मानव के मध्य संतुलन के द्वारा वर्तमान पीढ़ियों का समावेशी विकास और भविष्य की पीढ़ियों के लिए संसाधनों को बचाया जा सके, इस बात का ध्यान रखकर संसाधनों का उपभोग किया जाए |

हवा, मिट्टी, पानी, पेड़-पौधे और जीव—ये मानव जीवन और प्रगति की बुनियाद हैं। जब लोग, सरकारें, व्यापार और प्रकृति संतुलन में होते हैं—जब हम संसाधनों का समझदारी से उपयोग करते हैं और पर्यावरण की रक्षा मिलकर करते हैं—तभी समाज समृद्ध होते हैं। प्रदूषण और पारिस्थितिकी तंत्र की क्षति हर देश और हर समुदाय को प्रभावित करती है, दूरदराज के गांव हों या आधुनिक शहर। चूँकि यह हानि सीमाएँ और आय स्तर नहीं देखती, टिकाऊ विकास और पर्यावरण संरक्षण हम सभी की साझा जिम्मेदारी है। भौतिक पर्यावरण मनुष्य और समाज के कल्याण के बीच बहुआयामी योगदान देता है।

माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः"

इसका अर्थ है: "यह भूमि (पृथ्वी) मेरी माता है और मैं इस पृथ्वी का पुत्र हूँ (अथर्ववेद (कांड 12, सूक्त 1, मंत्र 12) से लिया गया है)

भारतीय संस्कृति प्राचीन काल से ही प्रकृति के साथ सहयोग व सह अस्तित्व में विश्वास रखती है। संघर्ष में नहीं | प्रकृति के कण-कण के साथ एकात्मकता का अनुभव करने और उसे यथासंभव कम से कम हानि पहुंचाना चिरकाल से यही भारतीय जीवन दर्शन का आदर्श रहा है ऐसे में गांधी के द्वारा चरखा ,स्वदेशी आन्दोलन के माध्यम से विदेशी कपड़ों का बहिष्कार व स्वदेशी को अपनाने पर बल यह सन्देश देता है कि गांधी जी भारतीयों के मन में स्वावलंबन, अनुशासित जीवन एवं आजीविका के साधन के रूप में स्वदेशी एवं चरखा को अपनाकर आत्मनिर्भर बना जाये |

CoP 26 ग्लांस्को में यूएनईपी विश्व प्रमुख इंगर एण्डरसन ने कहा हम एक तिहरे गृह संकट से जुझ रहे हैं जलवायु परिवर्तन जैव विविधता हानि और प्रदुषण व अपशिष्ट ये संकट दशकों से संसाधनों का अन्धाधुन्ध उपयोग व उत्पादन का परिणाम हैं हम किस तरह जीते और उपभोग करते है यह बहुत मायने रखता है

भारत सरकार ने मिशन लाइफ का आरम्भ किया जो अतीत से प्रेरणा, वर्तमान में कार्यवाही करके भविष्य पर ध्यान केन्द्रीत करता हैं। रिड्यूस रियुस और रीसाईकिल हमारे जीवन की मूल अवधारणाएं है सक्रिय अर्थव्यवस्था हमारी संस्कृति एवम जीवन शैली का अभिन्न हिस्सा है। लाइफ मिशन के तहत वैश्विक नेटवर्क बनाया जाने का संकल्प लिया गया है जिसे प्रो प्लेनेट पिपुल नाम दिया| ये नेटवर्क वैश्विक स्तर पर पर्यावरण अनुकूल जीवनशैली अपनाने और समुदाय के माध्यम से एक पारिस्थितिकी तन्त्र बनाने का प्रयास करेगा जिससे पर्यावरण के साथ समायोजन कर टिकाऊ,सुदृढ़ एवं स्थायी जीवनशैली को अपनाया जा सके। इसमें पांच विशेष बातें निकली जिनको पंचामृत का नाम दिया गया |

महात्मा गाँधी का स्वदेशी और ग्रामीण पुनर्जागरण का दृष्टिकोण पर्यावरण हितैषी होने के साथ साथ आत्मनिर्भर भारत में सन के लक्ष्य को प्राप्त करने की कुंजी है। एक स्वदेशी आधारित आत्मनिर्भर भारत बनाने लिए मेक इन इंडिया जैसी सरकारी योजनाओं को उत्साहपूर्वक आगे बढ़ाया जाना चाहिए। यहाँ तक कि प्राचीन भारतीय ग्रंथ सातवीं सदी के ग्रंथ शिलप्पधिकरम जैसे महाकाव्य या आदि शंकराचार्य जी जिन्होंने संपूर्ण भारत की यात्रा की उनकी कृतियों में भी अकाल, चोरी एवं हत्या का कोई जिक्र नहीं मिलता है वहीं 16 वीं सदी में भारत एक आत्मनिर्भर देश था जिसमें स्वदेशी का विशेष योगदान था। गांव स्वावलम्बी और आत्मनिर्भर थे। उद्योग फल फूल रहे थे।

भारतीय शिक्षा भी अच्छे स्तर पर थी वारेन हेस्टिंग्स ने कहा कि भारत के लोग 18 वीं शताब्दी में पढ़ने

लिखने में विश्व से अधिक प्रतिभाशाली थे स्त्री शिक्षा सीमित मात्रा में थी।।

समाज को आत्मनिर्भर बनाने के लिये लघु एवं मध्यम उद्योगों को एकीकृत कर और उनके उत्पादों को बाजार प्रदान करने उसके इरादे से भारत सरकार लगातार प्रयास कर रही है ऐसे प्रयास में आत्मनिर्भर भारत मेक इन इंडिया स्वच्छ भारत हरित प्रबंधन के साथ साथ लोकल फॉर वोकल जैसी विभिन्न योजनाओं एवं नीतियों को लाया जा रहा है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

स्वदेशी आंदोलन की शुरुआत 7 अगस्त 1905 को कलकत्ता के टाउन हॉल में एक विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए रखी गई साथ ही भविष्य का प्रस्ताव भी पास किया गया जिसके तहत विदेशी वस्तुओं तथा सेवाओं और शिक्षा का बहिष्कार किया गया इसका परिणाम यह हुआ कि विदेशी वस्तुओं के व्यापार में विशेष गिरावट आ गई। ये स्वदेशी की बयार हर क्षेत्र में देखी गई जहाँ शिक्षा के क्षेत्र में रवीन्द्रनाथ टैगोर के शांति निकेतन से प्रेरणा लेकर कलकत्ता में नेशनल कॉलेज खोला गया इसी के साथ 15 अगस्त को राष्ट्रीय शिक्षा परिषद की स्थापना की गई वहीं तिनकठिया जैसी शोषणकारी नीतियों का पालन करना आम लोगों ने बंद कर दिया।

वही दूसरी ओर गांधी के भारत आगमन के 1915 में, गांधी जी जब दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे तो उन्होंने देखा कि यहां अंग्रेजों का कपड़ा उद्योग अपने चरम पर था। अंग्रेज यहां से कच्चा माल ले जाकर वहां तैयार करते थे और फिर उसी कपड़े को यहां बेचते थे। गांधी जी ने 1920 के शुरुआती दिनों में, ग्रामीण स्वरोजगार और आत्मनिर्भरता के लिए खादी को बढ़ावा देना शुरू कर दिया था। जल्द ही यह स्वदेशी आंदोलन का एक प्रतीक बन गया। उन्होंने अपनी किताब यंग इंडिया में लिखा है कि चरखा देश की समृद्धि और स्वतंत्रता का प्रतीक है। उन्होंने आह्वान पर आजादी के हर एक नायक चरखे का इस्तेमाल, खुद के कपड़े को बनाने के लिए करना चाहिए।

अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर संघ की स्थापना 1919 में वर्साय की सन्धि के तहत हुई इसकी स्थापना से मजदूरों ने एक होकर अपने हक की मांग की। भारतीय मजदूर न्यूनतम मजदूरी और काम के घण्टे निश्चित करने की मांग कर रहे थे।

गांधी जी का मानना था कि "खादी के कपड़े पहनना न सिर्फ अपने देश के प्रति प्रेम और भक्ति-भाव दिखाना है बल्कि कुछ ऐसा पहनना भी है, जो भारतीयों की एकता दर्शाता है।"

इस आंदोलन का उद्देश्य पारंपरिक उद्योगों को पुनर्जीवित करना, स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाना और ब्रिटिश प्रभुत्व का विरोध करना था।

धर्म एवं स्वदेशी

गांधीजी के अनुसार धर्म में स्वदेशी हमारे गौरवपूर्ण अतीत को परिलक्षित करता है यूरोप में जो हंगामा चल रहा है उससे पता चलता है कि कोई सभ्यता आधुनिकता में बुराई और अंधकार की शक्तियां प्रतिनिधित्व करती है जबकि भारतीय सभ्यता अपने सार में दैवीय शक्तियों का प्रतिनिधित्व करती है आधुनिक सभ्यता भौतिकवाद से प्रेरित है जबकि हमारी सभ्यता में आधुनिकता का पुट परम्परा के साथ पाया जाता है हमारे धर्म में सर्व धर्म समभाव स्वदेशी का प्रमाण हैं वही वासुदेव कुटुम्बकम (संसार एक परिवार है) यह भावना स्वदेशी भावना का विशाल रूप ।

आधुनिक सभ्यता विकास की प्रतिस्पर्धा में की अंधी में भौतिकवादी, विनाशक एवं प्रकृति व पर्यावरण विरोधी हो गई है जबकि भारतीय वेद, शास्त्र, सत्य का उचित पालन, दूसरों की संपत्ति का लालच करने से परहेज करना और हमारी दैनिक आवश्यकताओं से अलग जमा नहीं करना वास्तविक धर्म का पालन है। गाँधी जी ने दलित वंचित वह समाज के अंतिम पायदान पर खड़े लोगों को हरिजन (ईश्वर के लोग) कहकर पुकारा जिससे लोगों में इनके प्रति जो हीन भावना है उस में कमी लाई जा सके। उन्होंने छोटे, स्थानीय और ग्राम-आधारित प्रौद्योगिकी की वकालत की, जिससे उपयोगकर्ता अपने द्वारा उत्पादित वस्तुओं से सीधे जुड़ सकें। उनके लिए तकनीकी प्रगति वास्तविक प्रगति का सूचक नहीं थी। चरखा गांधीजी के लिए आदर्श तकनीकी उपकरण था। उनके मन में एक ऐसी प्रौद्योगिकी की छवि थी जो मानव श्रम का स्थान न ले। ई.एफ. शूमाकर गांधीजी के इस विचार से बहुत प्रभावित थे, जिन्होंने 'मध्यवर्ती प्रौद्योगिकी' की अवधारणा के माध्यम से इसे लोकप्रिय बनाया।[3]

स्वदेशी और अर्थव्यवस्था

"भगवान ने इंसान के शरीर को बनाने में उसकी बड़ी-बड़ी इच्छाओं की एक लिमिट तय की। इंसान ने तुरंत उस लिमिट को पार करने के तरीके ढूंढ लिए। भगवान ने इंसान को बुद्धि दी ताकि वह अपने बनाने वाले को जान सके। इंसान ने इसका गलत इस्तेमाल किया ताकि वह अपने बनाने वाले को भूल जाए। मैं इस तरह बना हूँ कि मैं सिर्फ़ अपने आस-पास के लोगों की ही सेवा कर सकता हूँ, लेकिन अपने घमंड में मैं यह दिखावा करता हूँ कि मुझे पता चल गया है कि मुझे अपने शरीर से दुनिया के हर इंसान की सेवा करनी चाहिए[4]

गाँधीजी के लिए चरखा आत्मनिर्भरता का प्रतीक था साथ ही गरीब व्यक्ति की आजीविका का आधार भी। गांधीजी ने इस बात की वकालत की कि जो स्वदेशी की भावना का पालन करता है, उसे केवल उन चीजों का उपयोग करना चाहिए जो हमारे निकटतम पड़ोसियों द्वारा उत्पादित की जाती हैं और उन उद्योगों को कुशल बनाकर उनकी सेवा करनी चाहिए, और उन क्षेत्रों में उन्हें मजबूत करना चाहिए जहां उनमें कमी पाई जाती है। भारत के स्वातन्त्र्य संग्राम के दौरान गांधीजी ने महसूस किया कि भारत की आर्थिक मुक्ति स्वदेशी उद्योगों को प्रोत्साहित करने और पुनर्जीवित करने में निहित है। गांधीजी ने खादी को समाज में इसके व्यावहारिक अनुप्रयोग में स्वदेशी के सिद्धांत का आवश्यक और सबसे महत्वपूर्ण परिणाम माना।

महात्मा गांधी के चरखे को फिर से शुरू करने को उसके ऐतिहासिक और नैतिक संदर्भ में समझना चाहिए। चरखे को फिर से शुरू करने का गांधी का मकसद सिर्फ़ औपनिवेशिक आर्थिक नियंत्रण का विरोध करना नहीं था, बल्कि औधोगिक आधुनिकता से बिगड़े नैतिक संतुलन को फिर से ठीक करना भी था। अपनी मशहूर रचना, हिंद स्वराज में, गांधी आधुनिक सभ्यता की आलोचना करते हैं, यह तर्क देते हुए कि इसने मेहनत को नैतिक ज़िम्मेदारी से और उत्पादन को मानवीय नैतिकता से अलग कर दिया है। इसलिए, गांधी के लिए, चरखा सिर्फ़ एक आर्थिक या राजनीतिक निशान नहीं था, बल्कि मेहनत की इज़्ज़त, आत्मनिर्भरता, नैतिकता और इंसानी इज़्ज़त को फिर से शुरू करने का एक मज़बूत ज़रिया था।[5]

गाँधीजी ने सार्वभौमिक प्रेम और सेवा की भावना से स्वदेशी की अवधारणा की वकालत की। स्वदेशी का समर्थक स्थानीय उत्पादों को प्राथमिकता देगा। मुझे विश्वास है कि हाथ से कताई और हाथ से बुनाई का

---

[3] डॉ. जॉन एस मूलक्कट्टू, महात्मा गांधी और पर्यावरण
[4] एम.के. गांधी, हिंद स्वराज.
[5] Sumita Narzary, Gandhi's Charkha: A Model for Sustainable Innovation and Environmental Ethics

पुनरुद्धार भारतके आर्थिक और नैतिक उत्थान में सबसे बड़ा योगदान देगा। लाखों लोगों के पास कृषि के पूरक के लिए एक सरल उद्योग होना चाहिए। वर्षों पहले कताई कुटीर उद्योग था, और यदि लाखों लोगों को भुखमरी से बचाना है, तो उन्हें अपने घरों में कताई शुरू करने में सक्षम बनाना होगा, और प्रत्येक गांव को अपना बुनकर वापस लेना होगा।

गांधीजी के विचारों में ग्रामीण अर्थव्यवस्था से आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ने की सीख है गाँधीजी ने कहा था कि भारत की आत्मा गांवों में बसती हैं जब हम गांव के सशक्त और आत्मनिर्भर बनाते हैं तो इससे देश सशक्त और आत्मनिर्भर बनता है वर्तमान सरकार द्वारा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए अनेक इस तरह पर किया जा रहा है गाँधी जी ने स्वदेशी को कानून कहा था जो मनुष्य के स्वभाव में रसा बसा होता है यह एक सार्वभौमिक विधि है जिसप्रकार प्रकृति के प्राकृतिक कानूनों की तरह इसे साधने की आवश्यकता नहीं होती है यह स्वअभिनय है स्वदेशी को स्वतंत्रता आंदोलन में सत्याग्रह स्वराज के साथ एक शक्ति के रूप में प्रयोग किया जो बहुत हद तक सफल रहा गाँधीजी द्वारा स्वदेशी का प्रयोग अंग्रेजों के विरुद्ध असहयोग आंदोलन के दौरान किया गया। इस आंदोलन में महिलाओं की भूमिका अहम थी जिन्होंने विदेशी कपड़ों की होली जलाई साथ ही आम जनता ने अंग्रेजों के अधीन अनेक नौकरियां त्याग दी इससे लोगों में स्वदेशी के प्रति जनचेतना का जागरण बढ़ने लगा क्योंकि अंग्रेजी शासन ने उद्योग धंधों को चौपट कर दिया ऐसे में गाँधीजी की चरखे की अवधारणा ने आम व्यक्तियों में आत्म सम्मान को बनाए रखने के साथ साथ आजीविका भी प्रदान की यह सर्वसम्मति का प्रतीक है यह सबसे गरीब के साथ सभी के लिए है।

गाँधीजी ने कहा कि मेरे लिए खादी स्वदेशी भारतीय मानवता की एकता और उसकी आर्थिक स्वतंत्रता और समानता का प्रतीक है और इसलिए जवाहरलाल नेहरू की काव्यात्मक अभिव्यक्ति मैं भारत की स्वतंत्रता की पोशाक है इसके अलावा खादी मानसिकता का अर्थ जीवन की आवश्यकताओं के उत्पादन एवं वितरण का विकेन्द्रीकरण इसलिए अब तक जो फॉर्मूला तैयार किया गया है यह है कि प्रत्येक गांव को अपनी जरूरतों की वस्तुओं और शहरों की जरूरतों के एक निश्चित प्रतिशत अतिरिक्त उत्पादन करना होगा भारी उद्योगों का केंद्रीयकरण तथा राष्ट्रीयकरण करने की आवश्यकता होगी लेकिन यह विशाल राष्ट्रीय गतिविधि के सबसे कम हिस्से पर कब्जा करेंगे, अर्थव्यवस्था जो मुख्य रूप से गांवों में होगी।

वर्तमान मे प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना सौर कृषि आजीविका योजना जिसमें किसान बंजर भूमि पर सोलर प्लांट लगाकर पैसा कमा सकता है इसके अतिरिक्त जैविक खेती को बढ़ावा देकर स्वदेशी को बढ़ावा दिया गया है हाल ही में पिछले दशक में भारत सरकार ने जैविक कृषि को बढ़ावा देने के साथ पेस्टिसाइड मुक्त खेती की ओर कदम बढ़ाए वही नीम कोटेड यूरिया को अपना कर विदेशी आयात निर्भरता को कम किया है सिक्किम भारत का पहला राज्य जो पूर्णतः जैविक खेती वाला राज्य वहीं दूसरी ओर ई नेम प्लेटफॉर्म के द्वारा किसानों के उत्पादों का मंडी की सुविधा दी गई है ताकि किसान बिचौलियों के चंगुल से बच सकें और अच्छा मूल्य प्राप्त कर सके ये सभी प्रयास मौलिक रूप से स्वदेशी का सार प्रस्तुत करते हैं.

गाँधी और पर्यावरण

मैं स्वीकार करता हूं कि विनाशकारी ऊर्जा वहां है, लेकिन यह क्षणभंगुर है, रचनात्मक के सामने हमेशा व्यर्थ है, जो स्थायी है। यदि विनाशकारी का बोलबाला हो तो सभी पवित्र रिश्ते - माता-पिता और बच्चे,

भाई और बहन, गुरु और शिष्य, शासक और शासित के बीच का प्यार - टूट जाएगा।[6] महात्मा गाँधी ने पर्यावरण संरक्षण जैसी शब्दावली का प्रयोग तो नहीं किया परन्तु जो उन्होंने कहा और अपने जीवन में पालन किया वो उनको पर्यावरणविद् बनाता है हालाँकि उनके समय में
पर्यावरणीय समस्याओं को इस तरह से पहचाना नहीं गया था तथापि अपनी अद्भुत दूरदर्शिता और अंतर्दृष्टि से उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि चीजें गलत दिशा में आगे बढ़ रही हैं।

उन्होंने 1909 में ही अपनी पुस्तक हिन्द स्वराज में ये चेतावनी दी थी उद्योगवाद एवं भौतिकवाद से दूर रहे क्योंकि वो नहीं चाहते थे कि भारत वासी इसकी गिरफ्त में आए। गांधी जी ने कहा था कि औद्योगिकीकरण और मशीनों का व्यक्ति के जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है हालांकि इसका ये अर्थ कतई नहीं है कि वो मशीनों के विरोधी थे उन्होंने बड़े पैमाने पर मशीनीकरण का विरोध किया। (गाँधी, 1947)

गांधी जी ने इन समस्याओं का हल स्पष्ट रूप से देख लिया था। हिंद स्वराज में आधुनिक सभ्यता की उनकी निंदा का उद्देश्य मानवता को इस विपत्ति से आगाह करना था। उन्होंने अपने देशवासियों से इस सभ्यता के आकर्षण में न फंसने की अपील की। वे पश्चिमी समाज को भी इसके दुष्परिणामों से बचाना चाहते थे। भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन के अग्रणी नेता और स्वतंत्रता के बाद भारत की समाज एवं राजनीतिक व्यवस्था के दूरदर्शी और योजनाकार के रूप में उन्होंने एक ऐसा खाका तैयार किया, जिसमें वैज्ञानिक-तकनीकी संस्कृति पर आधारित पश्चिमी मॉडल को पूरी तरह से खारिज कर दिया गया। गांधी जी के अनुसार, आधुनिक सभ्यता का मूल आधार भौतिक सुख-सुविधाओं और समृद्धि की अतृप्त और अंतहीन यात्रा है। सभी आधुनिक पश्चिमी सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक सिद्धांत और संस्थाएँ इसी मूल सिद्धांत पर आधारित हैं और दुनिया के अन्य हिस्सों के लोग अंधाधुंध इसका अनुकरण कर रहे हैं। गांधी जी का मानना था कि यदि इस प्रवृत्ति को रोका नहीं गया और इसका कोई उपयुक्त विकल्प नहीं निकाला गया, तो परिणाम विनाशकारी होंगे। उदाहरण के लिए, आधुनिक पश्चिमी आर्थिक विकास गैर-नवीकरणीय संसाधनों, अर्थात् कोयला, तेल और धातु के अत्यधिक उपयोग पर फल-फूल रहा है। जब तक यह कुछ पश्चिमी देशों तक सीमित था, तब तक इसने इतनी समस्याएँ पैदा नहीं कीं। लेकिन जब पूरी दुनिया इस कभी न खत्म होने वाले प्रयास में लग जाएगी, तो यह प्रकृति को भारी नुकसान पहुँचाएगा। प्रकृति जीवन का अभिन्न अंग है और यदि मनुष्य एक सीमा से अधिक इसमें हस्तक्षेप करता है, तो वह अपने अस्तित्व की कीमत पर ऐसा कर रहा होगा। पूर्ण और सार्थक जीवन केवल प्रकृति के साथ सामंजस्य और अनुरूपता में ही संभव है।[7]

उन्होंने नदियों और अन्य जल निकायों को प्रदूषित करने के लिए लोगों की आलोचना की उन्होंने धुएं और शोर से हवा को प्रदूषित करने के लिए मिलों और कारखानों की आलोचना की।

यह महत्वपूर्ण है कि भारत ने उस वर्ष जी20 की अध्यक्षता संभाली है जब हम महात्मा गांधी की शहादत की 75वीं वर्षगांठ पर उन्हें श्रद्धांजलि देंगे। हर स्तर पर संघर्षों के साथ, चाहे व्यक्तिगत स्तर पर, पारिवारिक स्तर पर, सामाजिक स्तर पर, अंतर-राज्य स्तर पर और अंततः वैश्विक स्तर पर - विशेष रूप से रूस-यूक्रेन युद्ध ने हमारे पारिस्थितिक तंत्र को घेर लिया है, महात्मा गांधी की अहिंसा हमारे विचारों का एक महत्वपूर्ण स्तंभ होनी चाहिए और हम क्या करते हैं।

अहिंसा के सार को भारत की जी20 प्रेसीडेंसी की थीम, वसुधैव कुटुम्बकम या एक पृथ्वी-एक परिवार-एक भविष्य को और भी रेखांकित किया गया है। महोपनिषद, अध्याय 6, श्लोक 71-72 का श्लोक वसुधैव

[6] Gandhi M.K ‘ahimsa-Harijan

[7] कृष्णा झा, महात्मा गांधी - एक असाधारण पर्यावरणविद्

कुटुंबक की भावना को दर्शाता है: **अयं बंधुरायम् नेति गणना लघुचेतसां उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुंबकम्** (इसका मतलब है: "केवल छोटे लोग यह कहकर भेदभाव करते हैं: एक रिश्तेदार है; दूसरा पराया है। जो लोग उदारता से रहते हैं उनके लिए पूरी दुनिया एक परिवार है।") पूरी दुनिया को एक परिवार बनाने के लिए, अहिंसा एक शक्तिशाली स्रोत है और बल. यह न केवल अन्य मनुष्यों को, बल्कि प्रकृति और अन्य सभी जीवित प्राणियों को भी एक साथ बांधता है; यह कई व्यक्तिगत, सामाजिक और वैश्विक समस्याओं का समाधान भी प्रदान करता है।

अन्तर्राष्ट्रीय सौर गठबन्धन की स्थापना भारत की पहल के बाद हुई थी। इसकी शुरुआत संयुक्त रूप से पेरिस में 30 नवम्बर, 2015 को संयुक्त राष्ट्र जलवायु सम्मेलन के दौरान COP-21 से पृथक भारत और फ्रांस द्वारा की गई थी। अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन सौर ऊर्जा से संपन्न देशों का एक संधि आधारित अंतर-सरकारी संगठन है।

ISA के प्रमुख उद्देश्यों में 1000 गीगावाट से अधिक सौर ऊर्जा उत्पादन क्षमता की वैश्विक तैनाती और 2030 तक सौर ऊर्जा में निवेश के लिये लगभग $1000 बिलियन की राशि को जुटाना शामिल है।

गाँधी जी के शुद्ध पर्यावरण के सपने को साकार बनाने के लिए भारत सरकार लगातार प्रयासरत है वहीं हमारे संविधान में नीति निर्देशक तत्व तथा मूल कर्तव्यों के रूप में नागरिक और राज्य दोनों को पर्यावरण संरक्षण की जिम्मेदारी दी है जिसे पूरा करना दोनों का नैतिक कर्तव्य है। वैसे ये बाध्यकारी नहीं है परन्तु संविधान में इनका स्थान अहम होने आदेशों के रूप में में है।

सन्दर्भ:

1. https://www.mkgandhi.org/environment/jha.php
2. एमके गांधी, हिंद स्वराज, जीए नटेसन एंड कंपनी, मद्रास, 1947,
3. Gandhi M.K ‘ahimsa-Harijan,1946
4. पर्यावरण पर गांधी के विचार प्रकृति के पांच तत्व, एमके गांधी, छात्रों के लिए, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, 1949
5. आधुनिक भारत का इतिहास- विपिन चन्द्र, पब्लिसिंग हाऊस ओरियंट ब्लैकस्वान 2008
6. गोविंद सिंह, महात्मा गांधी एक सतत विकास अग्रदूत
7. the mind of mahatma Gandhi encyclopedia of Gandhi thoughts - compiled and edited R.k Prabhu and UR Rao
8. एमके गांधी, छात्रों के लिए, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, 1949, श्रीनिवास शास्त्री, एचएसएल पोलाक में प्रशंसाएँ, महात्मा गांधी, जीए नटेसन एंड कंपनी, मद्रास, 1930,
9. समाज दर्शन का सर्वेक्षण लेखक- डा. शिव भानु सिंह पब्लिकेशन शारदा भवन इलाहाबाद 2019-20
10. कृष्णा झा, महात्मा गांधी - एक असाधारण पर्यावरणविद्
11. John S. Moolakkattu, "Gandhi as a Human Ecologist", published in the Journal of Human Ecology, Vol. 29, No. 3 (2010),
12. Sumita Narzary, Gandhi’s Charkha: A Model for Sustainable Innovation and Environmental Ethics